'प्रयास' में एक अनूठा प्रयास

अमिताभ श्रीवास्तव

Veteran Journalist, received two lifetime achievement award for journalism.

जब हमने कुछ चुनी हुई लड़कियों को देश के सबसे बड़े पर्व 'गड़तंत्र दिवस' पर अपने विचार रंगों और काव्य के माध्यम से काग़ज़ पर उतारने के लिए कहा तो ऐसी रंगों की फुहार होगी सोचा ना था।

असल में ये बालिकाएँ हमारे आपके घरों में पलने और रहने वाली साधारण लड़कियाँ नहीं थीं।ये वो बच्चे थे जिन्हें या तो घरों से अपराधियों द्वारा निकाल कर बेच दिया गया था या जिन्हें घर कभी नसीब ही नहीं हुआ और उन्हें जबसे उनको याद है वो स्वयंग्सेवी संस्था 'प्रयास' के तुग़लक़ाबाद स्थित लड़कियों के आवास में रह रही हैं।

लेकिन जैसे ही उनके हाथ में रंग और ब्रश आये वो तो जैसे अपनी ज़िन्दगी के सारे गिले शिकवे भूल कर अपनी भावनाओं को रंग भरने में जुट गयीं।

जैसा कि उनकी कुछ कृतियों को इस पत्रिका में देखने से पता चलता है देशभक्ति केवल पैसे वालों या 'तथाकथित' सभ्य समाज वालों की जागीर नहीं है।

इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले अधिकतर बच्चों की हम आपको क़ानूनी मान्यताओं की वजह से शक्ल नहीं दिखा सकते और ना उनका परिचय करा सकते हैं क्योंकि १८ से कम उम्र वाले अशक्त बच्चों का सार्वजनिक परिचय देना ग़ैर क़ानूनी है लेकिन उनके परिचय के किए ये कृतियाँ ही उनकी पहचान हैं।

लेकिन हम आपको ये तो बता ही सकते हैं ये लड़कियाँ देश के हर प्रांत से आयी हैं।उनका धर्म,उनकी भाषा,उनकी बोली यहाँ तक की उनकी जन्म कुंडली भी उनकी परिचायक नहीं हैं और नाम तो बहुत दूर की बात है।

उनके धर्म का पता इस देश की राष्ट्रीय पताका है जिसको इन बच्चों ने इतनी शिद्दत से अपनी पेंटिंग में उतार कर भारत की एकता का अभूतपूर्व परिचय दिया है।

उनका परिचय देश के नेता और स्वतंत्रता सेनानी नेहरु,अम्बेडकर और भारत के लौह पुरूष सरदार पटेल हैं जिनको इन बच्चों ने काग़ज़ पर उतार कर अपनी परिपक्व सोच का परिचय दिया है।

इनकी कृतियाँ इस बात की भी गवाह हैं कि ये बच्चे चाहे कहीं से आए हैं वो अब ठीक जगह पर हैं।उनकी परवरिश अब 'प्रयास' जैसी एक ऐसी संस्था में हो रही है जहाँ इंसान की पहचान उसकी कुंडली या धर्म से नहीं बल्कि उसकी योग्यता से होती है,उसकी सोच से होती है उसके कृत्य से होती है।

इस प्रतियोगिता में ना केवल बच्चों को पेंटिंग के लिए आमन्त्रित किया गया था बल्कि उन्हें इस अवसर पर गड़तंत्र,आज़ादी और मुक्ति के विषय पर लिखने को भी कहा गया था।

और जैसा कि आप इन प्रस्तुतियों में से कुछ चुनिंदा चित्रों को देख कर समझ सकते हैं इन बच्चों को आज़ादी का महत्व शायद हमारे जैसे सम्पन्न परिवार के बच्चों से अधिक होता है क्योंकि इसमें से बहुतों ने अपना बचपन बच्चों की तरह जिया ही नहीं।

कुछ बच्चों ने अपनी ज़िन्दगी का दर्द इतनी ख़ूबसूरती से अपनी पेंटिंग ही नहीं अपनी पंक्तियों में अंकित किया है कि विश्वास नहीं होता ये बच्चे समाज से तिरस्कृत और प्रताड़ित वर्ग से हैं।

उनके गालों पर ठहरे हुए आँसू उनके दर्द ही नहीं उनकी प्रतिभा की भी पर्याय बन चुके हैं।

अगर इन लड़कियों को सही मार्ग दर्शन और प्रोत्साहन मिल जाये तो ये ना जाने क्या क्या कीर्तिमान स्थापित कर सकती हैं।उम्मीद है इस पत्रिका को पढ़ने वालों को इनकी प्रतिभा का परिचय मिल गया होगा किसका कहीं ना कहीं इनके भविष्य पर प्रभाव ज़रूर पड़ेगा।